ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL**04292**
RNI REG. NO. UPBIL/**2014/66218** **PP. No.- 146-147**

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-20, No.- II, Issues-40, YEAR- April-June 2026

भारत की आजादी में महारानी लक्ष्मीबाई के साथ अन्य महिलाओं का योगदान

प्रज्ञा सिंह, 2. डॉ0 कमलेश तिवारी

शोध अध्येत्री, 2. शोध निर्देशक– प्राचीन इतिहास, महात्मा गॉधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी (उ0प्र0) भारत

Received-26.04.2026, Revised-08.05.2026, Accepted-14.05.2026, E-mail:pragyabhu14@gmail.com

सारांशः रानी लक्ष्मी बाई और अन्य महिला साथियों ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम 1857 में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ सशस्त्र संघर्ष किया। उन्होंने अपनी वीरता और नेतृत्व क्षमता से सबको प्रेरित किया। रानी लक्ष्मी बाई के साथ–साथ अन्य महिला स्वतंत्रता सेनानियों ने महिला सशक्तिकरण की नींव रखी और अन्य महिलाओं को स्वतंत्रता में भाग लेने के लिए प्रेरित किया। इन महिलाओं ने अपने साहस, नेतृत्व और समर्पण से स्वतंत्रता के संघर्ष में महत्वपूर्ण योगदान दिया और भारतीय समाज की महिलाओं की स्थिति सुधारने में मदद की। उदाहरण के तौर पर झलकारी बाई लक्ष्मी बाई के हमशक्ल थी और उनकी सेवा में प्रमुख स्थान पर थी।

कुंजीभूत शब्द– वीरांगनाएं, प्रथम स्वतंत्रता संग्राम, कूटनीतिक योगदान, रणचण्डी वीरता, राष्ट्र भक्ति की ज्वाला, धार्मिक सहिष्णुता।

प्रस्तावना– भारत की आजादी में रानी लक्ष्मीबाई का कूटनीतिक योगदान प्रसंसनीय रहा है। जब–जब अंग्रेजों ने भारत में लूट मचाई तब–तब समूचे देश के अलग–अलग स्थान के क्रांतिकारियों ने स्थानीय जनता को अपने साथ लेकर उनका विरोध किया है। झांसी से रानी लक्ष्मीबाई का विरोध बहुत ही उल्लेखनीय रहा है। जिन्होंने देशभक्ति की भावना से ओत–प्रोत होकर महान व्यक्तित्व व अटूट साहस के साथ अंग्रेजों का विरोध किया। जिसमें कुछ राजाओं ने भी उनका सहयोग किया।

प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की नायिका झांसी की महारानी लक्ष्मीबाई की 'मनु' से लेकर क्रांतिकारी वीरांगना लक्ष्मीबाई बनने की अदभुत यात्रा है। इनके द्वारा युद्ध के लिए महिलाओं की सेना का गठन करना बहुत उल्लेखनीय रहा, जो इस प्रकार हैः मेमोरीज ऑफ द सेंट्रल इंडिया पुस्तक में मैलसन ने उस समय महारानी लक्ष्मी बाई के दरबार में हिंदू मुस्लिम एकता पर आश्चर्य व्यक्त किया है।

डॉक्टर भगवान दास ने 'झांसी राज्य का इतिहास और संस्कृति' की रचना कर हमें उस समय की सामाजिक एवं सांस्कृतिक स्थिति की जानकारी प्रदान की है।

जॉन स्मिथ ने अपनी लेखनी 'दि रिबेलीयन झांसी' में महारानी लक्ष्मीबाई की वीरांगना होने का प्रमाण प्रस्तुत किया है।

'झांस की रानी' के लेखक वृंदावनलाल वर्मा ने इसमें महारानी लक्ष्मीबाई के जीवन के प्रत्येक पहलुओं पर प्रकाश डाला है व रानी के रणचंडी वीरता एवं राष्ट्रभक्ति ज्वाला वाले व्यक्तित्व से हमें परिचित कराया है।

रानी लक्ष्मीबाई के व्यक्तित्व को निम्नलिखित शीर्षकों द्वारा व्यक्त किया जा सकता है।

हिन्दू मुस्लिम एकता की प्रस्तोता– महारानी लक्ष्मीबाई की धार्मिक सहिष्णुता का इसी से पता लगाया जा सकता है कि आज तक झांसी में हिन्दू–मुस्लिम दंगे नहीं हुए हैं। सभी धर्म के लोगों को अपने–अपने त्यौहार, पर्व मनाने की आजादी थी। लक्ष्मीबाई ने वजीर खान को झांसी का गौरव बताया था। इस प्रकार आश्वारोहण में अमिर खान, गोलंदाजी में गौस खान, शस्त्र चलाने में भाउबक्शी, नृत्य में दुर्गाबाई, सैन्य संचालन में रघुनाथ सिंह और जवाहर सिंह इन सभी को झांसी राज्य का गौरव बताया।

मुस्लिम महिलाएं जूही और मोतीबाई सहेलियां थी रानी की। रानी लक्ष्मीबाई ने हिन्दू और मुस्लिम को एकता के सूत्र में पिरोए रखा।

ऊँच–नीच में भेदभाव का दमन... रानी लक्ष्मीबाई उर्फ मनु का बचपन हर वर्ग के बच्चों व लड़कों के साथ बिता जिससे पुरूषों के समान खुलापन उनके व्यक्तित्व में आ गया था। जिससे प्रत्येक वर्ग का प्यार इनको मिलता रहा।

महिला सशक्तिकरण– विष्णु भट्ट गोडसे ने लिखा है कि महारानी शक्ति के आधार पर स्त्री और पुरूष में कोई भेदभाव नहीं करती थीं। रानी स्वयं दिन की शुरूआत पुरूषो के समान कठिन परिश्रम से करती थीं। अपनी सहेली मुंदर के साथ व्यायाम व मलखंब घोड़े की सवारी व तोप चलाने में अन्य महिलाओं को भी निपुण बनाती थी। रानी का सपना था कि महिलाएं बलशाली बने तभी एक योग्य व बहादुर बालक पैदा होंगे।

अदम्य साहसी रणबांकुरी– जब बुंदेलखंड के डाकुओं से जनता बहुत परेशान थी तब रानी ने इस समस्या के उन्मूलन के लिए मोतीबाई को जासूस नियुक्त किया तथा मोतीबाई ने रानी को डाकू कुंवर सागर सिंह के गिरोह व उनके स्थान की पूरी जानकारी दी। जानकारी प्राप्त होने के बाद लक्ष्मीबाई ने डाकुओं के उन्मूलन करने की ठान ली। वह घनघोर वर्षा के बीच अपनी महिला साथियों के साथ उसे पकड़ने निकल पड़ी। एक ओर से मुंदर तथा दूसरी ओर से काशीबाई ने डाकुओं पर धावा बोल दिया।

डाकू सागर सिंह बहुत चालाक था लेकिन रानी की व्यूह रचना को तोड़ नहीं सका और पकड़ा गया। इस प्रकार रानी ने बुंदेलखड की जनता की डाकुओं से रक्षा की।

डाकुओं को बनाया क्रांतिकारी– महारानी के चुंबकीय व्यक्तित्व ही थे कि सागर सिंह जैसे डाकू ने रानी के कहने पर डकैती को छोड़ने व देश की आजादी में रानी की सेना को सहयोग देने की सौंगध खाई तथा 1857 की क्रांति में अंग्रेजों के विरूद्ध लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुआ।

महिलाओं की राष्ट्रीय चेतना का उदय– महारानी लक्ष्मीबाई ने उस समय महिलाओं में राष्ट्रीय चेतना जागृत की जब महिलाएं घर में भी घुंघट के अंदर रहा करती थीं। उनको इस चाहारदीवारी से बाहर निकाला व उन्हें युद्ध का अभ्यास कराया व शस्त्र चलाने की शिक्षा में पारंगत किया। उन महिलाओं के अंदर ऐसी राष्ट्रीय चेतना का उदय किया जिसके परिणाम स्वरूप महिलाआं ने 1857 की क्रांति में अपने प्राणों की आहुति दी। जिसे देखकर विरोधी अंग्रेज ह्यूरोज भी दंग रह गया। 1857 की क्रांतिू में रानी लक्ष्मीबाई के साथ उनके महिलाओं ने अपने प्राणों की आहुति दी जिनका उल्लेख इस प्रकार हैः

झलकारी बाई– 20 नवंबर 1830 से 4 अपैल 1857, पति पूरन सिंह, जाति– कोरन, झलकारी बाई ने 1857 के युद्ध में रानी लक्ष्मीबाई के साथ अंग्रेजो के छक्के छुड़ाए थे। बिहारी लाल हरित ने झलकारी बाई को गुमनामी से उभरन के लिए वीरांगना झलकारीबाई नामक पुस्तक की रचना की। इसकी निम्न पक्तियां इस प्रकार हैं।

लक्ष्मी बाई का रूपधार, झलकारी खड़क सवार चली।

अनुरूपी लेखक/ संयुक्त लेखक

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-20, No.- II, Issues-40, YEAR- April-June 2026

वीरांगना निर्भय लश्कर में, शस्त्र अस्त्र तनधार चली।।

महारानी लक्ष्मीबाई ने झलकारी बाई को अपनी सेना में महिला दुर्गा दल की सेनापति नियुक्त किया था। झलकारी बाई ने अेंग्रेजों के विरूद्ध 1857 की क्रांति में अंग्रेजों के कई आक्रमणों को विफल किया था। इनके सम्मान में 22 जुलाई 2001 में भारत सरकार ने एक डाक टिकट जारी किया।

झलकारी बाई ने महारानी को अंग्रेजों से बचने के लिए स्वयं लक्ष्मीबाई का रूप धारण कर अंग्रेजों के पास रानी लक्ष्मी बाई बनाकर गई। झलकारी बाई के इस अदम्य साहस को देखकर ह्यूरोज दंग रह गया और कहा कि अगर भारत की कुछ स्त्रियां भी ऐसी हो जाए तो अंग्रेज जल्द ही भारत छोड़ देने को विवश हो जाएंगे।

झलकारी बाई की जीवनी को लिखने का कार्य मोहनदास नैमिशराय ने 'वीरांगना झलकारी बाई' नामक पुस्तक के रूप में किया है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि 1857 के युद्ध में जय भवानी का नारा देकर झलकारी बाई ने अंग्रेजों को किस प्रकार पीछे हटने पर मजबूर किया।

वीरांगना मोतीबाई– मोतीबाई झांसी में राजा गंगाधर राव के दरबार में नर्तकी थी। रानी लक्ष्मीबाई ने इनको अस्त्र–शस्त्र चलाने की शिक्षा दी तथा 1857 के युद्ध में मोतीबाई ने अंग्रेजों के खिलाफ रानी के लिए जासूसी का भी काम किया तथा युद्ध के दौरान मोहम्मद गौस के साथ तोपों का सकुशल संचालन कर तोप के गोलों को बिजली की तरह अंग्रेजों के ऊपर बरसाया तथा ह्यूरोज की सेना से अंतिम सांस तक युद्ध करते हुए 21 मार्च 1858 में वीरगति को प्राप्त हुई।

सुंदर और मुंदर– यह दोनों रानी लक्ष्मीबाई की दासियां थीं। रानी ने दोनों को ही युद्ध की शिक्षा देकर युद्ध कला में निपुण किया था। 1857 की क्रांति में सुंदर और मुंदर दोनों ने ही अंग्रेजों के विरूद्ध रानी के साथ युद्ध करते हुए अपने प्राणों की आहुति दी व वीरगति को प्राप्त हुई।

कुछ अन्य महिलाएं जिन्होंने आजादी में अपने प्राणों की आहुति दी उसमें काशीबाई, जूही, बक्सिनभाऊ इन महिलाओं ने भी अपने अंत समय तक अंग्रेजों के विरूद्ध लक्ष्मीबाई की तरफ से युद्ध करते हुए आजादी की लड़ाई में भाग लिया व वीरगति को प्राप्त हुई।

इस प्रकार हम देखते हैं कि 1857 की क्रांति में महारानी लक्ष्मीाई द्वारा तैयार की गई महिला सेना ने ना केवल अपने पराक्रम और शौर्य का परिचय दिया बल्कि वीरता से लड़ती हुई वीरगति को प्राप्त हुई, उनके बलिदान को हम कभी भूल नहीं सकते।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. झांसी की रानी–वृन्दावन लाल वर्मा, 1951.
2. जली थी अग्नि शिखा– महाश्वेता देवी, (ह्यूजरोज की डायरी के अंश)।
3. झांसी राज्य का इतिहास एवं संस्कृति– डॉ0 भगवानदास।
4. दि रिबेलियस रानी– सर जॉन स्मिथ।
5. झांसी की रानी लक्ष्मीबाई– पारसनीस।
6. मांझा प्रवास– विष्णुभट्ट गोडसे, 1907.
7. ह्यूरोज का मिलिट्री डिस्पैच।
8. मेमोरीज ऑफ द सेन्ट्रल इण्डिया– मैलेसन।
9. वीरांगना झलकारीबाई– भवानी शंकर विशारद, 1964.
10. झलकारीबाई– मोहनदास नैमिसराई, 2002.
11. वीरांगना झलकारी काव्य– बिहारीलाल हरित, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी।

*****